“कलात्मक प्रतीकों में तिलक की महत्ता”

प्रोफ. मोहन सिंह मावड़ी
कंचन

मनुष्य ने अपने मन में जागृत विचारों को कला के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया एवं कला मानव मस्तिष्क की उच्चतम कल्पना है। “मात्र भौतिक जगत को मूर्त रूप में प्रस्तुत कर देना कला का एकमात्र कार्य नहीं है अपितु कला अमूर्त भावों, विचारों एवं धार्मिक सिद्धान्तों को आकार देने का भी विशेष कार्य करती है।“[1] किसी विशेष विचार की अभिव्यक्ति के लिए कला में रूपों का प्रयोग किया जाता है। “कलाकार के चित्रभूमि पर अंकन आरम्भ करते ही रूप का निर्माण आरम्भ हो जाता है।[2]

कला में प्रतीकों का महत्वपूर्ण स्थान है। कला जगत के सूक्ष्म एवं निराकार विचारों, विश्वासों, मान्यताओं, परम्पराओं को आकार देने के लिए कला शिल्पियों ने प्रतीकों का सृजन किया। यही प्रतीक हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

प्रतीक वस्तुतः धार्मिक एवं दार्शनिक भावों तथा आध्यात्मिक मान्यताओं का सूक्ष्म रूप है। कला में प्रतीकों का उद्भव अनेक कारणों से हुआ। कल्याण की भावनाओं को व्यक्त करने हेतु मांगलिक प्रतीकों का सृजन हुआ।[3] धार्मिक भावना से प्रेरित होकर देव पूजन हेतु प्रतीकों का प्रयोग किया गया। इसी प्रकार धार्मिक क्रिया-कलापों में तिलक धारण करना अत्यंत प्राचीन परम्परा है।